वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा : एक अनुशीलन

डॉ. दीपक कुमार
सहायक प्रोफेसर हिंदी
राजकीय महाविद्यालय, भेरियां कुरुक्षेत्र

वैश्वीकरण अंग्रेजी के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द का हिंदी अनुवाद है। वैश्वीकरण को भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, निजीकरण व बाजारवाद आदि नाम भी दिए गए हैं। भारत में इसकी शुरूआत 1991 से हुई। यह विश्व के लोगों, कंपनियों और सरकारों के बीच एकीकरण की प्रक्रिया का नाम है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने विश्व को एकजुट किया है। भौगोलिक दूरियों को कम किया है, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति लोग जागरूक हुए हैं। उद्योगों का विकास हुआ है व सूचना तंत्र और तकनीकी विकास तीव्र गति से हुआ है। डॉ. माधव सोनटक्के लिखते हैं कि – ''संपूर्ण विश्व में स्थित मानव जाति का अपने क्षेत्र, जाति, धर्म, संस्कृति तथा राष्ट्र के सीमित दायरे से निकलकर 'विश्वमानव' के रूप में विस्तार। इस रूप में वैश्वीकरण एक राजनैतिक चेतना है। वैश्वीकरण को 'विश्ववाद' भी कहा जा सकता है।''[1]

विश्व बाजार के साथ एक नई उपभोक्ता संस्कृति का प्रचार–प्रसार तीव्र गति से हो रहा है जिसका सीधा प्रभाव अपने देश की भाषा, संस्कृति, समाज और साहित्य पर देखा जा सकता है। वैश्वीकरण के दौर में भाषा की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से वर्तमान दौर में हिंदी भाषा की दशा और दिशा का अवलोकन आवश्यक है। ''भाषा शब्द संस्कृत की भाष् धातु से निर्मित है। इसका शाब्दिक अर्थ है – व्यक्त या स्पष्ट वाणी अर्थात् बोलना या कहना।''[2] हिंदी भारत की जनभाषा, संपर्कभाषा, मातृभाषा व राष्ट्रभाषा है। हिन्दी केवल भाषा ही नहीं, अपितु संस्कृति है। यह हमारे जीवनमूल्यों, आचार–विचार, परंपरा एवं संस्कृति का दूसरा नाम है। वैश्विक स्तर पर हिंदी विश्व के अनेक देशों में बोली एवं पढ़ी जाती है। ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, बेल्जियम, रूस, चेकोस्लोवाकिया आदि देशों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन हो रहा है। केवल अमेरिका के ही 113 विश्वविद्यालयों में हिन्दी का शिक्षण कार्य चल रहा है। अमेरिका की पेनसिल्वेनिया यूनिवर्सिटी ने तो अपने यहाँ एम.बी.ए. करने वाले छात्रों के लिए हिंदी का दो वर्षीय कोर्स अनिवार्य कर दिया है ताकि अमेरिका को भारत से व्यापार करने में भाषिक समस्या न हो। हिंदी भाषा को समृद्ध बनाने हेतु अब तक नागपुर, मॉरिशस, दिल्ली, त्रिनिदाद, लंदन, सूरीनाम, अमेरिका, जोहान्सबर्ग आदि में विश्व हिन्दी सम्मेलन हो चुके हैं। जिनमें हिन्दी को विस्तार देने की इच्छा जाहिर की गई है। ''आज हिन्दी भाषा एवं साहित्य की गरिमा को आलोकित करने के लिए 500 से ऊपर पत्र–पत्रिकाएँ छप रही हैं। विभिन्न विषयों पर हिंदी में हर रोज 20 किताबें छपकर बाजार में आ जाती हैं। दुनियां का कोई ऐसा विषय नहीं जिस पर हिंदी भाषा की दो–चार पुस्तकें उपलब्ध न हो।''[3]

सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी भाषाः

सूचना प्रौद्योगिकी अंग्रेजी के Information Technology का हिन्दी रूपांतरण है। सूचना का अर्थ है – अवगत या परिचित कराना तथा प्रौद्योगिकी का अर्थ है – विज्ञान व तकनीक। सूचना–प्रौद्योगिकी में सूचनाओं का आदान–प्रदान तीव्र गति से होता है। आज कम्प्यूटर पर हिन्दी भाषा को प्रतिष्ठित करने के कारण शिक्षा, संस्कृति, मनोरंजन, अनुसंधान, कृषि क्षेत्र, बैंकिंग व्यवस्था व व्यापार में भी हिंदी ने अपना विशेष स्थान बना लिया है। टेलीविजन पर प्रसारित होने वाले चैनलों जैसे डिस्कवरी, एनिमल वर्ल्ड, सोनी, कार्टून चैनल आदि ने भी अपने कार्यक्रम हिंदी भाषा में प्रसारित करने आरंभ कर दिए हैं।

प्रौद्योगिकी ने ज्ञान और विकास के द्वारों को एक साथ खोल दिया है। वर्तमान में कम्प्यूटर, इंटरनेट, टेलीफोन, मोबाइल फोन, फैक्स, ई–मेल, ई–कॉमर्स, स्मार्ट कार्ड, एटीएम कार्ड आदि सूचना–प्रौद्योगिकी के सशक्त माध्यम हैं। विद्यार्थी अब ई–पुस्तकें, परीक्षा के लिए प्रश्न–पत्र, पाठ्य सामग्री के साथ–साथ विषय विशेषज्ञों और शोधकर्ताओं से संपर्क भी कर सकता है। शिक्षा के साथ–साथ व्यापार एवं वाणिज्य, रोजगार, कृषि, उद्योग व प्रशासन में भी यह तकनीक प्रभावी प्रमाणित हो रही है।

बाजार एवं हिन्दी भाषाः

बाजारवाद के कारण हिन्दी फारसी व अंग्रेजी से बहुत प्रभावित हो रही है। जैसे पढ़े फारसी बेचे तेल, ये देखो कुदरत का खेल' इसमें फारसी प्रभाव है। बाजारवाद पर हिन्दी का वर्चस्व है। वह अंग्रेजी के साथ–साथ ही नहीं बल्कि दो कदम आगे

ISBN: 978-81-954645-0-0

बढ़ी है। इससे भारतीयों के मन में अपनी भाषा के प्रति गर्व, अभिमान व अस्मिता का भाव बढ़ा है। बढ़ते बाजारवाद के कारण हिंदी रोजगारपरक बनी है। मीडिया से लेकर विज्ञापन, फिल्म, साहित्य, उद्योग आदि में हिन्दी के कारण लाखों भारतीयों के लिए रोजगार सृजन हुआ है। यह बाजारवाद का ही प्रभाव है कि कोई भी कम्पनी हिंदी को अनदेखा नहीं कर सकती। ''कोई भी निजी कम्पनी चाहे वह अमेरिका की हो या इंग्लैंड की, भाषा को अनदेखा करके नहीं चल सकता, जिसको देश की बहुसंख्यक जनता समझती हो।''[6] हिंदी आम बाजार की भाषा बन चुकी है। बाजार लाभ की भाषा जानता है और आज मनोरंजन की दुनियां में हिंदी सबसे अधिक मुनाफा देने वाली भाषा के रूप में स्थापित हुई है। हमारा भारत भले ही बहुभाषिक हो, किंतु यहाँ विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत भाग हिंदी में ही तैयार किया जाता है। विदेशी कंपनियों को भी अपने उत्पाद की बिक्री के लिए हिन्दी भाषा का चयन करना पड़ता है। अब तो व्यापार, उद्योग, विज्ञान आदि क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रयोग होने लगा है।

इंटरनेट और हिन्दी भाषाः

इंटरनेट एक अन्तर्जाल है जिसने पूरी दुनिया को समेट लिया है। आज 'वर्ल्ड वाईड वेब' इंटरनेट पर सूचना का अक्षय स्रोत बन गया है। इंटरनेट की सहायता से हम आज पर्यटन, शिक्षा, साहित्य, व्यापार, खेल, चिकित्सा आदि सभी क्षेत्रों की जानकारी क्षणभर में प्राप्त कर सकते हैं। आज बाजार में हिन्दी के अनेक सॉफ्टवेयर आ गये है जैसे अक्षर फॉर विंडोज, सुलिपि, आकृति आदि। हिंदी डॉज के आने से कम्प्यूटर में दिए जाने वाले निर्देश हिन्दी में भी दिए जा सकते हैं। इंटरनेट पर विभिन्न विषयों की जानकारियों का खजाना भरा पड़ा है।

इंटरनेट पर हिन्दी साहित्य से संबंधित बहुत सी सामग्री कविता–कोश, रचनाकार, हिंदी समय जैसी वेब–साइटों पर उपलब्ध हैं, जिन्हें जब चाहे पढ़ने के लिए प्रयोग किया जा सकता है। आज से कुछ समय पूर्व हिंदी में प्रकाशन की बहुत बड़ी समस्या थी। इस कारण कुछ ही लोग अपने विचार दूसरों तक पहुंचा पाते थे। इंटरनेट ने विचारों की अभिव्यक्ति को सरल कर दिया। इंटरनेट पर ब्लॉग अच्छा और सुगम माध्यम है जिसमें अपने विचारों को अभिव्यक्त किया जा सकता है। इस कारण हिन्दी आम जन तक पहुंच बना रही है एवं हिन्दी का संसार विकसित होता जा रहा है।

मीडिया और हिन्दी भाषाः–

मीडिया शब्द का अर्थ है – ''माध्यम' मीडिया जनसाधारण की भावनाओं को अभिव्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। मीडिया विभिन्न रूपों में अपनी अभिव्यक्ति कर रहा हैः–

1. प्रिंट मीडियाः समाचार पत्र–पत्रिकाएं, संपादन, अनुवादकार्य, फोटोग्राफी आदि।
2. इलेक्ट्रॉनिक मीडियाः रेडियो, दूरदर्शन, मल्टीमीडिया, ऐनिमेशन, फिल्म निर्माण आदि।
3. अन्य क्षेत्रः विज्ञापन, विज्ञान, जनसंपर्क आदि।

भारत में पत्रकारिता का आरंभ 30 मई 1826 को प्रकाशित हिन्दी पत्र 'उदन्तमार्तण्ड' से हुआ। आज हिन्दी पत्रकारिता अपने चरमोत्कर्ष पर है। आज अनेक समाचार–पत्र दैनिक जागरण, पंजाब केसरी, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, दैनिक ट्रिब्यून, अमर उजाला आदि हिन्दी में प्रकाशित होते हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिकाओं में धर्मयुग, दिनमान, संडेमेल, साहित्य अमृत आदि प्रसिद्ध हैं। आज हिंदी पत्र–पत्रिकाओं की खपत अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाओं से कहीं अधिक हैं।

रेडियों तथा टेलीविजन इलैक्ट्रॉनिक मीडिया के अन्तर्गत आते हैं। अनेक न्यूज चैनल जैसे स्टार–न्यूज, आजतक, सहारा टी.वी., एन.डी.टी.वी., जी न्यूज आदि लगातार हिन्दी न्यूज प्रसारित कर रहे हैं। फिल्म के क्षेत्र में हिंदी को फलने–फूलने का पर्याप्त अवसर मिला है। आज भारत में दुनियां की सर्वाधिक फिल्में बनती हैं। जिनमें हिन्दी फिल्मों की संख्या सर्वाधिक है। फिल्म व्यापार को लगभग पचास प्रतिशत आय सिर्फ हिंदी से होती है। अंग्रेजी व दक्षिण भारतीय फिल्मों का हिंदी रूपांतरण कर प्रस्तुत किया जा रहा है। आज हॉलीवुड के फिल्म निर्माता भी जानते हैं कि यदि उनकी फिल्में हिंदी में रूपांतरित की जाएगी तो यहाँ से वे अधिक मुनाफा कमा सकेंगे। बहुत सी हिंदी फिल्मों को विदेशों में बड़े चाव से देखा गया जैसे 'हम आपके हैं कौन', देवदास, 'रोबोट', 'खिलाड़ी', 'शोले', 'लगान', 'थ्री इडियट' आदि।

विज्ञापन और हिन्दी भाषाः

वैश्वीकरण के इस चुनौती भरे युग में विज्ञापनों के माध्यम से कंपनिों द्वारा अपने उत्पाद बेचने की होड़–सी लगी हुई

है। इसके लिए वे हिंदी भाषा का ही चयन करते हैं। उपभोक्ता संस्कृति का सृजन विज्ञापन के माध्यम से होता है और विज्ञापन–संस्कृति संचार माध्यम के संबंध में जानकारी देना, उसे स्मरण करना है।''आज टी.वी. चैनलों एवं मनोरंजन की दुनियां में हिंदी सर्वाधिक प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा है। कुल विज्ञापनों का लगभग 75 प्रतिशत हिंदी माध्यम है। दर्शक या स्रोता पहले विज्ञापन की भाषा से आकर्षित होता है, उसके बाद ही वह वस्तु के प्रति आकर्षित होता है।''[4] इसीलिए मल्टीनेशनल कंपनियाँ अपना प्रचार–प्रसार हिंदी भाषा में कर रही हैं। जर्मन विद्वान लोठार लुत्से ने कहा है, – ''हिन्दी सीखे बिना भारतीयों के दिलों में नहीं पहुँचा जा सकता।''[5] विश्व में मॉल संस्कृति का विकास भी हिन्दी के बढ़े प्रचलन के कारण हुआ है। मॉल की खपत के लिए उपभोक्ताओं को हिंदी विज्ञापनों के माध्यम से ही आकर्षित किया जाता है, जैसे कोका–कोला, डोमिनोज, जोमेटो कंपनियाँ अपने उत्पादों को बेचने हेतु हिंदी अभिनेताओं व विज्ञापनों का सहारा लेते हैं।

अनुवाद तथा हिन्दीः

किसी भी भाषा के साहित्य को पढ़ने से पूर्व उस भाषा का ज्ञान होना आवश्यक है, किन्तु अनुवाद के माध्यम से उस साहित्य को अपनी भाषा में सरलता से पढ़ सकते हैं। विश्व में लगभग 3500 भाषाएं बोली जाती हैं और लगभग 350 भाषाओं में साहित्य प्रकाशित होता है। अनुवाद के माध्यम से ही व्यक्ति इन सभी भाषाओं के साहित्य को जान सकता है। श्रीमद्भगवतगीता आज विश्व की सोलह भाषाओं में ऑनलाइन उपलब्ध है जिससे अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी का प्रसार हो रहा है। विदेशों में रहने वाले हिन्दी भाषी साहित्यकार जिनमें अभिमन्यु अनत, श्रीपूजा नंदनेमा, रामदेव धुरंधर आदि प्रमुख हैं जबकि विदेशी लेखक प्रो. ओदोलेन स्मेकल (चेकोस्लोवाकिया), प्रो. रूपर्ट स्नेल (ब्रिटेन), प्रो. हर्मन बैग (टैक्सेस विश्वविद्यालय), पं. विवेकानंद शर्मा (फीजी) आदि भी अपनी लेखनी से हिंदी साहित्य संसार को समृद्ध कर रहे हैं। हिन्दी कवियों एवं लेखकों तुलसीदास, सूरदास, कबीर, बिहारी आदि कवियों की कविताएं विदेशी भाषाओं में अनुवादित हुई हैं व प्रेमचंद का गोदान तो विश्व की सभी भाषाओं में अनुवादित हो चुका है।

साहित्य और हिन्दीः

हिंदी भाषा को विश्व में लगभग 70 फीसदी लोग बोलते हैं। हिंदी के प्रचार–प्रसार को बढ़ावा देने के लिए रामायण मंडलियों, आर्य समाज, सनातन धर्म सभा जैसी पारंपरिक संस्थाओं के अलावा कई स्वैच्छिक संस्थाएँ अपना योगदान कर रही हैं। साहित्य में वैश्वीकरण का संबंध लगभग सभी विधाओं में उल्लेखनीय है। वैश्वीकरण और आज की कविता का संबंध अतुलनीय है। आलोचना पत्रिका के सहस्राब्दी अंक में प्रेमरंजन अनिमेष की एक छोटी कविता 'हामिद का चिमटा' प्रकाशित हुई जिसकी पंक्तियां निम्न हैः–

''कविता मेरे लिए तीन पैसे का चिमटा है
जिसे बचपन के मेले में मोल लिया था मैंने
कि जले नहीं रोटियां सेकने वाले हाथ
की दूसरे को दे सकूं अपने चूल्हे की आग।''[7]

ये पंक्तियाँ इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि वैश्वीकरण के जमाने में भी हमारे कवि कविता के प्रयोजन और उसकी मानवीयता से परिचित है। वर्तमान कविता का मूल्यांकन करते हुए राजेश जोशी ने लिखा है – ''वर्तमान वैश्वीकरण पूंजीवाद के सामने हमारी राजनीति जितनी निहत्थी और निरूपाय है, कविता उतनी असहाय नहीं है।''8

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि हिंदी अब दुनियां की जरूरत बन रही है। संप्रेषणः संशोधन और संवेदन के बीच हिंदी ने अपना रूतबा वैश्विक स्तर पर स्थापित कर लिया है। सूचना और प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिंदी कार्यक्रम विभिन्न देशों में प्रसारित किए जा रहे हैं। इंटरनेट माध्यम से हिंदी के समाचार–पत्र व पत्र–पत्रिकाएँ विविध साईटस पर देखे जा सकते हैं। हिंदी अत्यंत तेजी से कम्प्यूटर, ई–मेल, ई–बुक तथा वेबसाईट की दुनियां में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है। यूरोप के देशों को भी अब लगने लगा है कि मंडी और बाजार को हिंदी के बिना जीता नहीं जा सकता। निश्चय ही हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है।

संदर्भ संकेतः

1. हिंदी के अद्यतन अनुप्रयोग – डॉ. माधव सोनटक्के, पृ. 8
2. भाषा विज्ञान एवं हिन्दी – डॉ. नरेश मेहता, पृ. 8
3. साहित्य अमृत – दामोदर खडसे, 2013, पृ. 37
4. समाज विज्ञान शोध पत्रिका–लेख विनय कुलश्रेष्ठ, पृ. 10
5. सुधीर पचौरी – भूमंडलीकरण, बाजार और हिन्दी, पृ. 57
6. हिन्दी के अद्यतन अनुप्रयोग – डॉ. माधव सोनटक्के, पृ. 11
7. डॉ. अवधेश मोहन गुप्त : विश्वभाषा हिन्दी स्थिति और संभावनाएं, पृ. 45
8. सुमित शर्मा : वैश्वीकरण और मीडिया, पृ. 101

ISBN: 978-81-954645-0-0